HINDI

Dr. Syed Rashid Ali
M.R.C.P.(UK)
P.O. Box 11560
Dibba - Al Fujaira
United Arab Emirates

जाग उठो

१८/१९ वी सदी में अंग्रेज भारत में बेपारी की हैसियत से आये और तमाम नाजायज तरीकों को अपनाकर उन्होंने भारतीय राज खत्म किया और खुद हुकमरान बन गये। उनके खिलाफ मुसलमानोंने सब तरफ से जिहाद किया और वो तीन मोर्चोंपर करीब कामयाब भी हुअे थे जैसे १८५७ का इन्कलाब और हजरत सैय्यद अहमद साब शहीद ने किया जिहाद। लेकिन कुछ बेवफा मुसलमानों के वजह से बात बन न सकी।

मुसलमानों के बेमिसाल जिहाद के हौसले की वजह जानने के लिये और ऐसे फिर ना हो इसकी तजवीज करने केलिये एक जाँच कमीशन १८६८ में लन्डन से भेजा गया जिसमे पार्लमेट मेम्बरान, अखबारी नुमाइंदे और चर्च के पाद्री थे। दो साल की जाँच के बाद इस कमिशन ने लौटकर अपनी रिपोर्ट बरतानी पार्लमेट में पेश की। इस रिपोर्ट में उन्होने ये शिफारिश की

'' हमें किसी आदमी को अल्लाह का नबी बनाकर खडा करना चाहिये जो इस्लामी जिहाद के हुकम को रद्द कर दे।''

इस काम के लिये कादीयान का मिर्झा गुलाम अहमद नाम का एक शक्स चुना गया। पंजाब के उसवक्त के गवर्नर को बादमें लिखे एक खत में इस आदमीने गवाही दी के वो एक मनमाना और मनघडत नबी है और एक पौधा है जिसे उसके अंग्रेजी मालीकोने अपने मतलब से बोया है। रानी विकटोरिया के सिलवर जुबली के मौकेपर भी इस आदमीने एक खत लिखा था। इस खत में अंग्रेजोसे अपनी खानदानी वफादारी उजागर की थी और याद दिलाया था के अपने बापने ५० हत्यार बंद घुडसवार १८५७ के भारत के आझादी केलिये लढनेवालों के खिलाफ अंग्रेजो को बतौर तौफा दिये थे। अपने खुदकी वफादारी का सबूत पैश करते हुअे लिखा था के उसने छोटी-बडी किताबें / पत्र लिखकर ५०,००० कापीया हर मुस्लिम मुलक में भिजवा दिये ताके ''जिहाद का गंदा ख्याल और अकीदा बेवकूफ मुसलमानों के दिल से जाता रहे''।

अब ये पौधा बहुत बडा हो गया है ओर पेड बन गया है। इसे अहमदिया ''मुस्लिम'' मिशन नाम से वे लोग चला रहे हैं। इस की शाख दुनिया के हर मुलक में वजूदमें आ चुकी है। मुसलमानों के बीच छुपे तौर पर ये लोग काम कर रहे हैं। गोया एक कॅन्सर की मानींद दुनिया के तमाम इस्लाम दुश्मन इनकी बडी मदद कर रहें हैं।

इन अहमदी - मिर्झा ई-कादयानीयों से इस्लामी दुनिया को भीतर से भारी खतरा पैदा हो गया है क्योंकि ये लोग हमारे बीच मुसलमीन होने का ढोंग रचाकर फिरते हैं। अपने आप को सच्चे सुन्नी मुस्लिम और इस्लाम के रखवाले बताते हैं। लेकिन हकीकत ये है के ये खुद मुसलमान नहीं हैं क्योंकि हजरत मुहम्मद (स्व.) के बाद भी नबी हैं ऐसा इनका अकीदा है। गुलाम मिर्झा अहमद इनके लिये नबी है। जो मिर्झा गुलाम अहमद कादयानी की नबूवतपर अकीदा नही रखते हैं ऐसे तमाम मुसलमानों को वों काफिर और हरामजादे कहते हैं।

गरीब और इस्लामी इलमसे नावाकिफ मुसलमानों को वे कादयानी या अहमदी बना रहे हैं। याने के गैरमुस्लिम बना रखे हैं। अफ्रीका, युरोप, अमरिका, बोसनिया, सेट्रल एशिया वगैरे और बंगलादेश, पाकिस्तान और अब भारत में भी इन्हे बडी कामयाबी मिल रही है। अफ्रीका में उन्होंने सूफी सिलसिला चल रखा है। उसे ''अहमदिया तरीका'' कहते हैं।

गरीबों को पैसे और बद्दीनों को लडकियाँ दी जा रही हैं। दिल ''जीते'' जा रहे हैं। इसाईलोगो वाले तरीके अपनाये जा रहे हैं क्योंकि इनके राहनुमा ज्यादातर वही लोग हैं। कम्यूनिझम खत्म हो जाने के बाद मगरबी इसाई मुलकोंने दुश्मन नंबर २ को याने इस्लाम को अब दुश्मन नंबर १ बना लिया है। वहाँ वहशी जानवरी हद तक लोग गिर चुके हैं। किस्म- किस्म की गुनहगारी में मुबतला हैं। दिली - दिमागी बेचैनी और नुकसानात से परेशान इन लोगों को जब इस्लामी अखलाक और सच्चाई और तौहीद की हकीकत पेश की जाती है तो वे मुसलमान बन जाते हैं। इस्लाम बडी रफ्तार से फैल रहा है। मगरबी हुकमतें थररा उठी हैं।

ऐसी हालत में सौ साल पहले लगाया हुआ पौधा अब फिर काम का बन गया है। मगरबी मुलकों की फिक्र का गैर फायदा भी कादयानी उठा रह हैं। मगरबी मुल्कों के लिये और क्या बेहतर हो सकता है के इस्लाम के नामपर कादयानियों से दोस्ती की जाये और उनके हाथों मुसलमानों को गैर मुसलमान बना दिया जाये जिससे असल इस्लाम की ताकत कमजोर पडे और आपस में झगडे फसाद और फितने भी पैदा हो। करोडों की मदद दी जात रही है। मुख्तलिफ जुबानों में कादयानी फितना इस्लाम के नामपर अनजान मुसलमानों के सामने पेश किया जा रहा है। T. V.पर ''मुस्लिम टेलिविजन अहमदीया'' चॅनेल लंडन और हाँकाँग से चार साटेलाईट के जरीये दुनियाभर में कादयानी फितना फैलान के काम में लगा हुआ है। पैसों की फिक्र ही नही। वो अमरीका और युरोपसे आता ही है। और हर कादयानी भी ६ से ३० फीसदी आमदनी अपनी जमात को बतौर चंदा हरमाह देता है। वैसे यहूदी इसराईल भी मदद में पीछे नहीं। उन्होंने तो एक पूरा नायाब छापखाना ही मिर्झा ताहेर को तौफा दिया है जो कादयानियों का चौथा ''खलिफा'' है और लन्डन में रहता। और ''इस्लाम'' की तहरीक इस्लाम दुश्मनों के मुलक में मुकीम होकर और गोया उनकी गोद में बैठकर उनकी दिमागी और माली ताकत के सहारे दुनिया भर में चलाता है !!! बात समझना आसान है। जैसे खुद रसूलुल्लाह (स्व.) के दौर में, वैसे इस दौर में भी कज्जाबोंका साथ इस्लाम दुश्मन दे रहे हैं।

रसूलुल्लाह (स्व.) ने दुआ की थी। आओ, वो दुआ हम भी करें। ऐ अल्लाह तू जब फितना भेजे, मुझे उस फितने की बुराईयों से बचा, आमीन।.

आपसे गुजारिश है के पूरी लगन के साथ इस फितने को मिटाने की कोशिश करें। इस अपील की झेरॉक्स निकाल कर बाँटते रहें।

जिनकी तायदार कुछ हजार थी वो आज कुछ करोड बन गयी है। अगर मुसलमानों को दीन का सही और कम से कम जरुरी इलम होता तो वो इतनी बडी तायदार में अहमदी या कादयानी याने गैरमुस्लिम नहीं बनते। तो सबक इस फितने से ये रहा के हम सब इस्लाम का सबक अच्छा सिखे और सिखाये लोगों को मुस्लिम बनाना तो दरकिनार, आओ कम से कम अपनों को गैर मुस्लिम होने से बचाये। कहते हैं के यहाँ भी एक दो कादयानी ''मसजिदे'' साल-दो साल में बनजाने का खतरा लाहक है। गिनती के चंद लोग हमारे बीच झूट फैलाने में कामयाब हो रहे हैं। क्या ये हमारे मूँह में चाटे के मानिंद नही हैं ?

कादीयानी के कज्जाब मिर्झा गुलाम अहमद ने नबूवत का दावा किया ईसा मसीह और महदी होने का दावा किया और अपनी किताबों में ये लिखा

१) कुरान के सुराह अलझिलझाल का सही माना रसूलूल्लाह मुहम्मद (स्व) समझ नही सके। (रुहानी खजायन जिल्द ३ पन्ना नं. १६६/१६७)

२) कुरान अल्लाह की किताब है और मेरे मूँह से निकले लब्ज है (१५ मार्च १८९७ को दिया इस्तहार)

३) नबी झूट बोलनेवाले होते हैं। (रुहानी खजायन जिल्द न. ३ पन्ना नं. ४७२).

४) हजरत मुहम्मद (स्व) पर नाजील हुअी वही भी गलत साबित हुअी। (रुहानी खजायत जिल्द नं -३ पन्ना नं. ४७२)

५) हजरत महदी नहीं आयेंगे। (रुहानी खजायन जिल्द नं.-३ पन्ना नं. ३७८)

६) वही से हजरत मुहम्मद (स्व) को इब्ज मरयम, दज्जाल, खार-ए-दज्जाल, याजूज माजूज और दब्बतुल अर्ज के बारे में मालूमात नहीं मिली। (रुहानी खजायत जिल्ह नं.-३ पन्ना नं. ४७३)

७) खार-ए-दज्जाल (दज्जालका गधा) रेल गाडी है, दब्बातुल अर्ज मुस्लीम आलीम हैं, और दज्जाल ईसाई पादरी हैं। (रुहानी खजायन जिल्द नं.-३ पन्ना नं. ३६५-३६६)

८) हजरत मसीह (अलै.) जादूका इस्तमाल करते थे और अनको उसमें बडी महारत हासिल थी। (रुहानी खजायन जिल्द नं.-३ पन्ना नं. २५७)

९) हजरत मसीह (अलै.) युसूफ नज्जार याने सुतार के बेटे थे। (रुहानी खजायन जिल्द नं.-३ पन्ना नं. २५४)

१०) ईसा (अलै.) का किरदार कैसे था? एक खूब खाने पीने का लालची शराबी, ना अल्लाहका बन्दा ना इबादत करनेवाला, एक मुँहजोर और घमंडखोर और खुद अल्लाह होने का दावा करने वाला। (मकतुबात-ए-अहमदिया जिल्द नं. ३)

११) ईसा (अलै.) के घरवाले नेक और पाक थे। तीन दादीयाँ तवायफ थी। उनके खून से ईसा (अलै.) पैदा हुअे थे (रुहानी खजायन जिल्द नं.-११ पन्ना नं. २९०)

१२) ब्रहीने अहमदीया (मिर्झा गुलाम कादयानी की लिखी किताब) अल्लाह की किताब है। (रुहानी खजायन जिल्द नं.-३ पन्ना नं. ३८६)

१३) कुरान में बयान किये हुअे मौजूजात जादू हैं। (रुहानी खजायत जिल्द नं.-३ पन्ना नं. ५०६)

१४) बेशक हमने इसे (कुरान को) कादयान में (पंजाब का एक शहर) उतारा। ऐसी आयत कुरान में है (रुहानी खजायत जिल्द नं.-३ पन्ना नं. १४०)

१५) मक्का, मदीना और कादीयान के नाम कुरान मे बाइज्जत बयान किये गये हैं। (रुहानी खजायन जिल्द नं. पन्ना नं. १४०)

१६) बयतुलफिक्र (वो कमरा जहाँ मिर्झा गुलाम अहमद बैठकर किताब लिखता था) हरम-ए-काबा के मानिंद है। और जो भी उसके अन्दर आता है अमन में होता है। (रुहानी खजायत जिल्द नं. १ और ब्रहीने अहमदिया पन्ना नं. ६६६-६६७)

१७) कुरान की आयात नं १ सुराह नं. १७ : अल इसराह [जिसमें नबी (स्व) को [illegible] कराया * सही मानों मे मिर्झा गुलाम अहमद के बापने बांधी हुअी कादीयानमें के मसीजद से तालुक रखती है। (इशतहार का मजमूआ जिल्द ३ पन्ना २५६)

१८) हजरत रसूलेअक्रम (स्व.) अल्लाह के खातमुन् नबी नहीं हैं (रुहानी खजायत जिल्ह नं.-३ पन्ना नं. ३२०)

१९) कियामत या इन्साफ का दिन ऐसी कोई चीज नहीं है और तकदीर भी नहीं है। (रुहानी खजायत पहली इडीशन जिल्द नं.-३ पन्ना नं.२)

२०) सुरज मगरीब से कभी नहीं ऊगेगा। (रुहानी खजायत जिल्द नं.-३ पन्ना नं. ३७६)

२१) कब्र में कोई सजा / आजाब नहीं दिये जायेंगे। (रुहानी खजायत जिल्द नं.-३ पन्ना नं. ३१६)

२२) तनासुख (एक हिन्दु अकीदा के रुह मुखतलिफ जिस्मों में फिर जाहिर होती है) सच है।(रुहानी खजायत जिल्द नं-१० पन्ना नं. २०८)

२३) कुरान गन्दे लब्जों से भरा हुआ है। (रुहानी खजायत जिल्द नं.-३ पन्ना नं. १५५-११७)

२४) जो मसीह आखरी दिनों में आने की पेशीनगोयी हर पाक किताब में की गयी है मैं दावा करता हूँ के मैं वही मसीह हूँ जिसका इन्तजार था। (रुहानी खजायल जिल्द नं.-१७ पन्ना नं. २९५)

२५) मैं आदम हूँ, नूह हूँ, इब्राहिम हूँ, इसहाक हूँ, याकूब हूँ, इस्माईल हूँ, मूसा हूँ, मरीयम का बेटा ईसा हूँ और मुहम्मद (स्व.) हूँ (रुहानी खजायल जिल्द नं.-२२ पन्ना नं. ५२१)

२६) बरतानवी सरकार केलिये खुद को बोया और खुदको बढाया हुआ मैं एक पौधा हूँ। (रुहानी खजायल जिल्द नं.-१३ पन्ना नं. ३५०)

२७) मेरे शुरु की जिन्दगी से लेकर आज ६५ साल उम्रतक में लगातार अपने कलम और जुबान से मुलमानों के दिलों को बरतानवी सरकार केलिये प्यार, मुहब्बत और वफादारी से भरदेने के अहेम काम में लगा हूँ और बेवकूफ मुसलमानों के दिलोंसे जिहाद का जज्बा खत्म कर देना चाहता हूँ। (रुहानी खजायल जिल्द नं.-१३ पन्ना नं. ३५०)

२८) बरतानवी सरकार के खातिर मैंने ५०,००० पन्ने छपवाये ओर सारे हिन्दोस्तान और दूसरे मुस्लिम मुमालिक में बटवाये है ताके जिहाद का ख्याल मिट जाये। नतीजा ये हुआ के हाजरो-लाखो लोगों ने अपना जिहाद का गन्दा ख्याल छोड दिया है। (रुहानी खजायल जिल्द नं.-१५ पन्ना नं. ११४)

२९) और मैं जानता हूँ केमेरे कलम का असर इस मुल्क के लोगोंपर और उनलोगों पर जिन्होंने मेरे साथ बैत की है पडा है। उन्होंने अहमदिया जमात बना ली है और उनके दिल अंग्रेजी हुकूमत के लिये प्यार से भरे हुअे है। वो अपनी जानभी सरकार के लिये निछावर करने केलिये तैयार है। (मिर्झा का अंग्रेजी हुकूमत को लिखा खत-तब्लीग-ए-रिसालत जिल्द नं. -६ पन्ना नं. ६५)

३०) हर कोई मेरी नबूवत पर ईमान रखता है सिवाय रंडीयोंके औलादों के जिनके दिल अल्लाहने बंद कर रखे हैं। (रुहानी खजायल जिल्द नं-५ पन्ना नं. ५४७)

३१) जो कोई मिर्झा पर ईमान नहीं रखता तो अल्लाह और उसके नबी का नाफरमाबरदार है और दोजख में जायेगा। (मिर्झा ने दिया इश्तहार तारीख २५ मई १९००)

प्यारे भाईयो, ये है हकीकत अहमदीयो / कादयानियों की। पहले भी और आज भी ये ईसाईयों के और यहूदियोंके वफादार रहे। उनके जासूस रहे। इस्लाम के गद्दार रहे। इनके चौथे खलीफा का दफ्तर लन्डन मे है। यहाँ से वो अपने मुबल्लीग दुनियाभर में इस्लाम दुश्मनों के दौलत का सहारा लेकर भेज रहे हैं। अगर वो अपने आपको मुसलमान और मजहब इस्लाम से नही बताते बल्के अपने दीन का कोई और नाम रख लेते तो हम खामोश रहते। मजहब में कोई जबरदस्ती नहीं. । मगर हमें ये लोग मुसलमान नहीं समझते और खुद मुसलमान नहीं फिर भी खुद को मुसलमान और इस्लाम से समझते हैं। और लोगों को अपनी बात छुपा कर फँसाकर कादयानी बनाते हैं। अल्लाह हम सबको इस फितनेसे बचाये **आमीन**।

* से मसजिदे अक्सा जेरुसलेम के जाने का जिक्र है)

http://alhafeez.org/rashid/
rasyed1958@gmail.com